पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

सरांश, निष्कर्ष, व्याख्या एवं सुझाव

5.1 भूमिका –

वर्तमान में हम बेरोजगारी एवं अनुपयुक्त रोजगार जैसी बड़ी समस्या से गुजर रहे है। देश की उन्नति वहाँ की शिक्षा व स्वस्थ्य की समुचित व्यवस्था पर निर्भर करती है। शिक्षा को उद्देश्यपरक और उपयोगी बनाने के लिए उसमें समयानुसार परिवर्तन अपेक्षित होता है, जिससे बालक एवं बालिकाएँ राष्ट्रोत्थान में अपनी सकुशल भूमिका निभा सकें। आधुनिक शिक्षा व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करती है। शिक्षा समाज के सदस्यों में सुधार लाने का साधन है। यह सुधार शिक्षक द्वारा लाया जाता है। शिक्षक उचित वातावरण के द्वारा व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया की व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार होता है। आज हमने नामांकन में लगभग 100% सफलता प्राप्त कर ली है पर आज भी अपव्यय व अवरोधन की समस्या यथावत बनी हुई है जिससे वह परीलक्षित होता है कि कहीं ना कहीं हमने समय की जरूरत व रूचि को पाठ्यक्रम के निर्माण में ध्यान नहीं दिया है।

आज भी स्कूलों से विद्यार्थियों का अपव्यय अवरोधन निरंतर जारी है। जिसमें कहीं ना कहीं पाठ्यक्रम का अरूचिपूर्ण होना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः हमें छात्रों की रूचि का विशेष ध्यान हर विषय में देना चाहिए।

5.2 प्रस्तुत अध्ययन –

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शोधार्थी ने कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में सामाजिक अध्ययन में रूचि व शैक्षिक उपलब्धि (विषयिक) का बालक व बालिका एवं ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

5.3 समस्या कथन –

"विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

5.4 शोध के उद्देश्य –

1. सामाजिक अध्ययन में छात्र–छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामाजिक अध्ययन में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान में उपलब्धि के माध्य अंकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि व शैक्षिक उपलब्धि के आपसी संबंधों का अध्ययन करना।

5.5 अध्ययन में प्रयुक्त चर –

आश्रित चर –

1. विद्यार्थियों की रूचि।
2. शैक्षिक उपलब्धि

स्वतंत्र चर –

1. लिंग – बालक/बालिका
2. क्षेत्र ग्रामीण/शहरी

5.6 परिकल्पनाएँ –

1. सामाजिक विज्ञान में छात्र व छात्राओं की रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सामाजिक विज्ञान को छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं में सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में रूचि व विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
5. सामाजिक अध्ययन के अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि व विद्यार्थियों की उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

5.7 शोध सीमाएं –

1. यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले से प्राप्त न्यादर्श पर आधारित है।
2. इसमें सिर्फ कक्षा 8वीं के 200 विद्यार्थियों के अध्ययन पर आधारित है।
3. शोध के लिए सिर्फ राज्य शासित शासकीय विद्यालयों को चुना गया है।

5.8 न्यादर्श चयन प्रक्रिया –

न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया जिसमें छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले कुछ शहरी व ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया व विद्यालय में भी विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चुना गया है। जिसमें 100 ग्रामीण व 100 शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया जिनमें 50 छात्र व 50 छात्राएँ थी।

5.9 प्रयुक्त उपकरण –

विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि परीक्षण हेतु स्वनिर्मित सामाजिक अध्ययन रूचि मापनी का प्रयोग किया गया है जो विषय विशेषज्ञ व विषय शिक्षकों द्वारा प्रमाणित है।

5.10 प्रयुक्त सांख्यिकी –

शोध में 'टी' मूल्य व सहसंबंध का प्रयोग कर तुलना की गई है जिससे ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों एवं छात्र व छात्राओं में अंतर देखा गया है। इस शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी प्रयोग की गई है :-

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. 'टी' परीक्षण व
4. सहसंबंध

5.11 शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष –

इस शोध के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :-

1. छात्र व छात्राओं में सामाजिक अध्ययन में रूप का मध्यमान क्रमशः 91.10 व 88.12 पाया गया। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग भेद का सामाजिक अध्ययन विषय में रूचि पर विशेष प्रभाव नहीं है।

   आज समाज में लड़के व लड़कियों में अंतर कम हो रहा है। सभी को समान अवसर दिये जा रहे है। अतः उनकी रूचि भी लगभग समान देखने को मिल रही है।

2. छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 98.56 व 103.91 है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में न्यूनतम अंतर प्रदर्शित होता है।

   छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। जो कि छात्राओं के पक्ष में जा रही है। अतः स्पष्ट है कि आज का समाज शिक्षा के महत्व को समझने लगा है। वह मानता है कि लड़के के शिक्षित होने से सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि लड़की के शिक्षित होने से पूरा का पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। अतः उन्हें अध्ययन के समान अवसर उपलब्ध कराये जा रहे है।

3. प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का

मध्यमान क्रमशः 101.95 व 100.52 पाया गया। अतः स्पष्ट है कि उनमें सार्थक अंतर नहीं है।

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि में समानता इस बात की परिचायक है कि आज समाज शिक्षा के महत्व से इंकार नहीं कर सकता उसने इसे स्वीकार किया है फिर चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी, जागरूकता समान है।

4. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक अध्ययन में रूचि का मध्यमान क्रमशः 90.00 व 89.22 है जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की रूचि में समानता की वजह यह हो सकती है कि आज ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में कोई विशेष अंतर नहीं रह गया है। शासकीय विद्यालयों में सभी को समान सुविधायें उपलब्ध है। जो उनमें रूचि व उपलब्धि स्तर को समान बनाये रखने हेतु जिम्मेदार है।

5. सामाजिक अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक अध्ययन में छात्रों की रूचि में सहसंबंध 0.06 है जो नगण्यात्मक है इस बात का प्रमाण है कि सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियो की रूचि व शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष संबंध नहीं है।

सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि व शैक्षिक उपलब्धि में विशेष संबंध के अभाव से स्पष्ट है कि उपलब्धि को केवल रूचि ही प्रभावित नहीं करती बल्कि अन्य कारक यथा शिक्षक का अभिभावक का या परीक्षा में उच्च प्राप्त अंक प्राप्त करने का दबाव भी प्रभावित करते है। आज के प्रतियोगिता के युग

में विद्यार्थी को हर विषय पढ़ना ही पढ़ता है। वह उच्च अंक प्राप्त करने के लिए अध्ययन करता है। आज बालक उच्च अंक प्राप्त किये बिना आगे के अध्ययन हेतु वांछित विषय प्राप्त नहीं कर सकते। अतः वे उच्च अंक प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम करते है। किसी एक या दो विषय की वजह से विद्यार्थी अपनी सम्पूर्ण प्राप्तांक को प्रभावित नहीं करना चाहते। अतः उनमें रूचि हो ना वो उच्च अंक प्राप्त करना चाहते है।

5.12 निष्कर्ष के आधार पर विश्लेषण –

1. विद्यार्थियों की रूचि उनकी उपलब्धि को अधिक प्रभावित नहीं करती है। अतः छात्रों की रूचि कम हो तो भी परेशान नहीं होना चाहिए व उसे उपयोगी व रूचिकर बनाये जाने का प्रयास करना चाहिए।
2. शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाकर कम करने वाले का घटाना व शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने वाले कारकों को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।
3. कुछ बातें जो विद्यार्थियों को पसंद नहीं है जैसे किताब का मोटा होना आदि को कम करने का प्रयास करना चाहिए।

5.13 भविष्य के अध्ययन हेतु सुझाव–

1. सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की रूचि को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना।
2. सामाजिक अध्ययन के अलावा अन्य विषयों में विद्यार्थियों की रूचि की जांच कर उसे शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर अध्ययन करना।

3. दो कक्षाओं जैसे कक्षा 6 या 7 और 10वीं के विद्यार्थियोंकी सामाजिक अध्ययन में रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. राज्य शासित व केन्द्र शासित विद्यालयों में तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं। (सामाजिक अध्ययन में रूचि व उपलब्धि के संदर्भ में)

5. सामाजिक अध्ययन विषय की शैक्षिक उपलब्धि का अन्य विषयों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ तुलना कर अध्ययन करना।